गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; मई,२०२०

बा-बापू१५०
१८६९-२०१९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–२, अंक ५ □ मई, २०२०

श्रद्धा का अर्थ है, आत्मविश्वास और आत्मविश्वास का अर्थ है ईश्वर में विश्वास।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– .... पृष्ठ

संपादकीय ....

आत्मकथा, प्रकरण–१४, मुकदमें की तैयारी १

Holistic Healthcare in a Post-Pandemic World ३

कोरोना से पायी सीख ४

फाउण्डेशन की गतिविधियां...७–९

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा
योगेश संधानसिवे एवं भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मोबाईलः 9404955272;
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net;
ई–मेल : info@gandhifoundation.net; CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि. जलगाँव– ४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*

(*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)*

मुखपृष्ठ छायाचित्र: अपने जन्मदिन के बाद लोगों को ऑटोग्राफ्स देते हुए महात्मा गाँधी, साथ में इला गाँधी, आभा गाँधी तथा डॉ. सुशीला नायर, अक्तूबर २, १९४४।

संपादकीय...

स्वदेशी आधारित आत्मनिर्भरता

कोविड–१९ की इस स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए प्रशासन, सामाजिक संस्थाएं, वैज्ञानिकों का समूह, सुरक्षा विभाग की सभी शाखाएं तथा व्यक्तिगत जिम्मेदारी के आधार पर हम सब इस स्थिति को नियंत्रण करने में अपनी सभी तरह की क्षमताओं को काम पर लगा रहे हैं। यह निश्चित रूप से संकट की स्थिति है, किंतु हम इसे अवसर के रूप में भी देख सकते हैं और देखना भी चाहिए। कोविड–१९ की वजह से पिछले दो महीनों के दौरान हमने कई उदाहरण देखें हैं जहाँ प्रकृति अपने मूल रूप में आ रही है, लोग अपने आसपास की सामग्री का ही प्रयोग करने लगे है, लंबी और अधिक दूरी वाली यात्राएं करना टाल रहे हैं, पर्यावरण का हनन चाहे वह प्रदूषण से हो रहा हो या अन्य उन सब में कमी आ गई है, सामाजिक जीवन के प्रति हमारा लगाव बढ़ने लगा है और विकास को देखने का हमारा नजरिया बदल रहा है। सभी गतिविधियों में हम सीमित क्षेत्र के साथ अपने जीवन की आवश्यकताओं को देखने लगे हैं और पिछले दो महीनों से वैसा जी भी रहे हैं। और आखिरी में इस संकट की वजह से हम आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाने की पहल भी कर रहे हैं। यह दूसरा मौका होगा जहाँ हम हमारी आजीविका और जीवनशैली के माध्यमों का चयन कर रहे हैं। पहली स्थिति स्वतंत्रता मिलने के तुरंत बाद दिखाई दी थी। चलो इस पर थोड़ा गौर करते हैं ताकि वर्तमान समय में लिया जा रहा निर्णय मजबूत बने।

आजादी के बाद हमारे पास दो रास्ते थे एक विकेन्द्रित उत्पादन आधारित अर्थव्यवस्था और दूसरी जो अभी हम देख रहे हैं वह यानी कि बड़े–बड़े उत्पादन पर आधारित औद्योगिक अर्थव्यवस्था। पहली अर्थव्यवस्था में मानव केंद्र में है और दूसरी में मशीन। दोनों अर्थव्यवस्था की अपनी–अपनी विशेषताएं भी है और कमजोरी भी। किंतु शाश्वतता के मापदंड से देखा जाए तो पहली अर्थव्यवस्थाओं बाजी मार जाती है। क्योंकि यह व्यक्ति, समूह, समाज और पर्यावरण के अस्तित्व को समानता और समग्रता से निखारती है। स्वदेशी भावना इसके मूल में रहती है। स्वदेशी भावना का आरंभ हमारे आसपास उत्पादित सामग्री, वातावरण, संसाधन, शिक्षा, आजीविका को प्राथमिकता देने के साथ ही होती है। स्वदेशी वह भावना है जो हमें दूर–दराज के इलाकों को छोड़कर अपने समीपस्थ क्षेत्रों का उपयोग करने और उनकी सेवा करने के द्वार खोलती हैं। एक दृष्टि से यह कल्याणकारी राज्य की नींव भी है। गाँधीजी कहते हैं कि आम आदमी की घोर निर्धनता का सबसे बड़ा कारण आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में स्वदेशी का त्याग है। ...यदि हम स्वदेशी के सिद्धांत का पालन करें तो आपका और मेरा यह कर्तव्य हो जाएगा कि ऐसे पड़ोसियों को ढूंढें जो हमारी आवश्यकता की वस्तुएं हमें दे सकें और यदि वे किन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करने में असमर्थ हों तो हम उन्हें अपेक्षित प्रशिक्षण दें।

वर्तमान समय में हम आत्मनिर्भर भारत की गूंज सुन रहे हैं, ऐसे दौर में उपरोक्त मुद्दों के आधार पर आगे बढ़ने का प्रयास करना होगा। ऐसा करते हैं तो यह स्वदेशी आधारित आचरण हजारों वर्षों तक हमारे अस्तित्व को टिका पाएगी।

इस अंक में गाँधीजी की आत्मकथा से अगला प्रकरण, डॉ. उल्लास जाजू द्वारा लिखित लेख 'कोरोना से पाई सीख', गुजरात विद्यापीठ के कुलाधिपति इलाबहन भट्ट का लेख तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

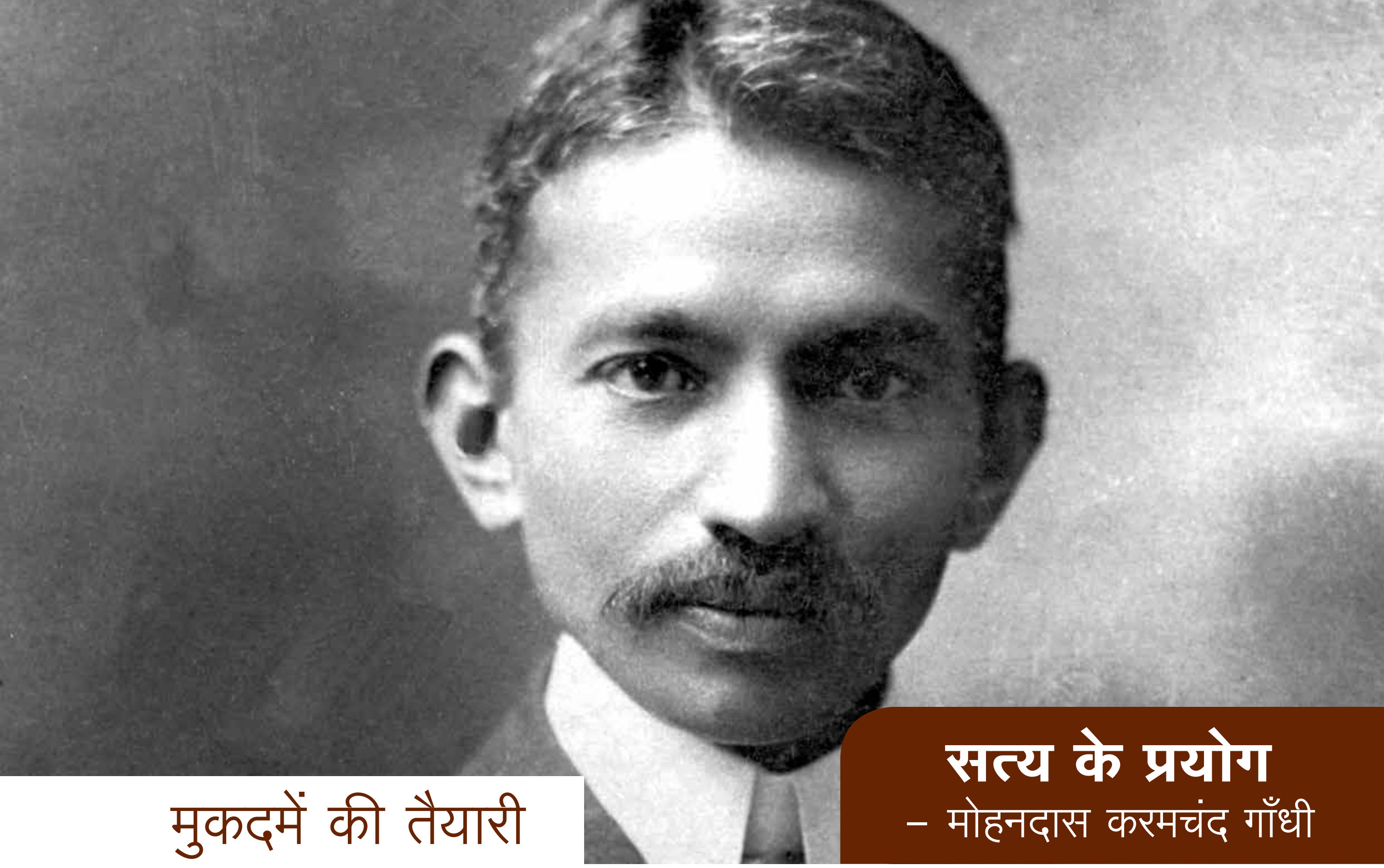

सत्य के प्रयोग
– मोहनदास करमचंद गाँधी

मुकदमें की तैयारी

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। एक मुकदमें के सिलसिले से गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका गए थे, मुकदमें की तैयारी में गाँधीजी की प्रामाणिक्ता का दर्शन होता है। उस से जुड़ी गाथा को आत्मकथा के भाग २ से प्रकरण १४ हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।*

– संपादक

प्रिटोरिया में मुझे जो एक वर्ष मिला, वह मेरे जीवन का अमूल्य वर्ष था। सार्वजनिक काम करने की अपनी शक्ति का कुछ अंदाज मुझे यहाँ हुआ। उसे सीखने का अवसर यहीं मिला। मेरी धार्मिक भावना अपने–आप तीव्र होने लगी। और कहना होगा कि सच्ची वकालत भी मैं यहीं सीखा। नया बारिस्टर पुराने बारिस्टर के दफ्तर में रहकर जो बातें सीखता है, सो मैं यहीं सीख सका। यहाँ मुझमें यह विश्वास पैदा हुआ कि वकील के नाते मैं बिलकुल नालायक नहीं रहूँगा। वकील बनने की कुंजी भी यहीं मेरे हाथ लगी।

दादा अब्दुल्ला का मुकदमा छोटा न था। चालीस हजार पौंड का यानी छह लाख रुपयों का दावा था। दावा व्यापार के सिलसिले में था, इसलिए उसमें बही–खाते की गुत्थियाँ बहुत थीं। दावे का आधार कुछ तो प्रामिसरी नोट पर और कुछ प्रामिसरी नोट लिख देने का वचन पलवाने पर था। बचाव यह था कि प्रामिसरी नोट धोखा देकर लिखवाये गये थे और उनका मुआवजा नहीं मिला था। इसमें तथ्य और कानून की गलतियाँ काफी थी। बही–खाते की उलझनें भी बहुत थीं।

दोनों पक्षों ने अच्छे से अच्छे सॉलिसिटर और बारिस्टर किये थे, इसलिए मुझे उन दोनों के काम का अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला। सॉलिसिटर के लिए वादी का मुकदमा तैयार करने और तथ्य संग्रह करने का सारा बोझ मुझ पर था। उसमें से सॉलिसिटर कितना रखता है और सॉलिसिटर द्वारा तैयार की गयी सामग्री में से बारिस्टर कितनी सामग्री का उपयोग करता है, सो मुझे देखने को मिलता था। मैं समझ गया कि इस केस को तैयार करने में मुझे अपनी ग्रहण–शक्ति का और व्यवस्था शक्ति का ठीक अंदाज हो जाएगा। मैंने केस में पूरी दिलचस्पी ली। मैं उसमें तन्मय हो गया। आगे–पीछे के सब कागज–पत्र पढ़ गया। मुवक्किल के विश्वास की, और उसकी होशियारी की सीमा न थी। इसमें मेरा काम बहुत आसान हो गया। मैंने बारीकी से बही–खाते का अध्ययन कर लिया। बहुत से पत्र गुजराती में थे। उनका अनुवाद भी मुझे ही करना पड़ता था। इससे मेरी अनुवाद करने की शक्ति बढ़ी।

मैंने कड़ा परिश्रम किया। जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ, धार्मिक चर्चा आदि में और सार्वजनिक काम में मुझे बहुत दिलचस्पी थी और मैं उसमें समय भी देता था, तो भी वह मेरे निकट गौण थी। मुकदमें की तैयारी को मैं प्रधानता देता था। इसके लिए कानून का या दूसरी पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक होता, तो मैं हमेशा पहले कर लिया करता था। परिणाम यह हुआ कि मुकदमें के तथ्यों पर मुझे इतना प्रभुत्व प्राप्त हो गया जितना कदाचित् वादी–प्रतिवादी को भी नहीं था, क्योंकि मेरे पास तो दोनों के ही कागज–पत्र रहते थे।

मुझे स्व. मि. पिंकट के शब्द याद आये। उनका अधिक समर्थन बाद में दक्षिण अफ्रीका

के सुप्रसिद्ध बारिस्टर स्व. मि. लेनर्ड ने एक अवसर पर किया था। मि. पिंकट का कथन था, तथ्य तीन–चौथाई कानून हैं। एक मुकदमें में मैं जानता था कि न्याय तो मुवक्किल की ओर ही है, पर कानून विरुद्ध जाता दिखा। मैं निराश हो गया और मि. लेनर्ड की मदद लेने दौंड़ा। तथ्य की दृष्टि से केस उन्हें भी मजबूत मालून हुआ। उन्होंने कहा, गाँधी, मैं एक बात सीखा हूँ, और वह यह कि यदि हम तथ्यों पर ठीक–ठीक अधिकार कर लें, तो कानून अपने–आप हमारे साथ हो जाएगा। इस मुकदमें के तथ्य हम समझ लें। यों कहकर उन्होंने मुझे एक बार फिर तथ्यों को पढ़–समझ लेने और बाद में मिलने की सलाह दी। उन्हीं तथ्यों को फिर जाँचने पर, उनका मनन करने पर, मैंने उन्हें भिन्न रूप में समझा और उनसे संबंध रखनेवाले एक पुराने मुकदमें का भी पता चला, जो दक्षिण अफ्रीका में चला था। मैं हर्ष–विभोर होकर मि. लेनर्ड के यहाँ पहुँचा। वे खुश हुए और बोले: अच्छा, यह मुकदमा हम जरूर जीतेंगे। जरा इसका ध्यान रखना होगा कि मामला किस जज के सामने चलेगा। दादा–अब्दुल्ला के केस की तैयारी करते समय मैं तथ्य की महिमा को इस हद तक नहीं पहचान सका था। तथ्य का अर्थ है, सच्ची बात। सचाई पर डटे रहने से कानून अपने–आप हमारी मदद पर आ जाते है।

अंत में मैंने दादा अब्दुल्ला के केस में यह देख लिया कि उनका पक्ष मजबूत है। कानून को उनकी मदद करनी ही चाहिए।

पर मैंने देखा कि मुकदमा लड़ने में दोनों पक्ष, जो आपस में रिश्तेदार हैं और एक ही नगर के निवासी हैं, बरबाद हो जाएँगे। कोई कह नहीं सकता था कि मुकदमें का अंत कब होगा। अदालत में चलता रहे, तो उसे जितना चाहो उतना लम्बा किया जा सकता था। मुकदमें को लम्बा करने में दो में से किसी एक पक्ष का भी लाभ न होता। इसलिए संभव हो तो दोनों पक्ष मुकदमें का शीघ्र अन्त चाहते थे।

मैंने तैयब सेठ से बिनती की। झगड़े को आपस में ही निबटा लेने की सलाह दी। उन्हें अपने वकील से मिलने को कहा। यदि दोनों पक्ष अपने विश्वास के किसी व्यक्ति को पंच चुन लें, तो मामला झटपट निबट जाए। वकीलों का खर्च इतना अधिक बढ़ता जा रहा था कि उसमें उनके जैसे बड़े व्यापारी भी बरबाद हो जाते। दोनों इतनी चिन्ता के साथ मुकदमा लड़ रहे थे कि एक भी निश्चित होकर दूसरा कोई काम नहीं कर सकता था। इस बीच आपस में बैर भी बढ़ता ही जा रहा था। मुझे वकिल के धंधे से धृणा हो गयी। वकील के नाते तो दोनों वकीलों को अपने–अपने मुवक्किल को जीतने के लिए कानून की गलियाँ ही खोज कर देनी थीं। इस मुकदमें में पहले–पहल मैंने यह जाना कि जीतनेवाले को पूरा खर्च कभी मिल ही नहीं सकता। दूसरे पक्ष से कितना खर्च वसूल किया जा सकता है, इसकी एक मर्यादा होती है, जब कि मुवक्किल का खर्च उससे कहीं अधिक होता है। मुझे यह सब असह्य मालूम हुआ। मैंने तो अनुभव किया कि मेरा धर्म दोनों की मित्रता साधना और दोनों रिश्तेदारों में मेल करा देना है। मैंने समझौते के लिए जी–तोड़ मेहनत की। तैयब सेठ मान गये। आखिर पंच नियुक्त हुए। उनके सामने मुकदमा चला। मुकदमें में दादा अब्दुल्ला जीते।

पर इतने से मुझे संतोष नहीं हुआ। यदि पंच के फैसले पर अमल होता, तो तैयब हाजी खानमहम्मद इतना रुपया एकसाथ दे ही नहीं सकते थे। दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए पोरबंदर के मेंमनों में आपस का ऐसा एक अलिखित नियम था कि खुद चाहे मर जाएँ, पर दिवाला न निकालें। तैयब सेठ सैंतीस हजार पौंड और मुकदमें का खर्च एक मुक्त दे ही नहीं सकते थे। उन्हें न तो एक दमड़ी कम देनी थी और न दिवाला ही निकालना था। रास्ता एक ही था कि दादा अब्दुल्ला उन्हें काफी लम्बी मोहलत दें। दादा अब्दुल्ला ने उदारता से काम लिया और खूब लम्बी मोहलत दे दी। पंच नियुक्त कराने में मुझे जितनी मेंहनत पड़ी, उससे अधिक मेहनत यह लम्बी अवधि निश्चित कराने में पड़ी। दोनों पक्षों को प्रसन्नता हुई। दोनों की प्रतिष्ठा बढ़ी। मेरे संतोष की सीमा न रही। मैं सच्ची वकालत सीखा मनुष्य के अच्छे पहलू को खोजना सीखा और मनुष्य–हृदय में प्रवेश करना सीखा। मैंने देखा कि वकील का कर्तव्य दोनों पक्षों के बीच खुदी हुई खाई को पाटना है। इस शिक्षा ने मेरे मन में ऐसी जड़ जमायी कि बीस साल की अपनी वकालत का मेरा अधिकांश समय अपने दफ्तर में बैठकर सैकड़ों मामलों को आपस में सुलझाने में ही बीता। उसमें मैंने कुछ खोया नहीं। यह भी नहीं कहा जा सकता कि मैंने पैसा खोया। आत्मा तो खोयी ही नहीं।

–'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.११६–११९, क्रमशः

गाँधी तीर्थ परिसर में स्थित गाँधीजी और कस्तूरबा का पुतला

Holistic Healthcare in a Post-Pandemic World

Mahatma Gandhi met the weeping women after the riots between Hindus and Muslims in Noakhali (East Bengal), November 7, 1946. Left: Sucheta Kripalani; centre: Satish Das Gupta and next to Gandhi: Abha Gandhi.

The current COVID-19 pandemic has become a wake-up call for every country, big and small, rich or poor, developed or developing. It has opened our eyes to the fragility of our healthcare systems, the instability of our economic structures, rising communal hatred, and to the vulnerabilities of our society. How well we cope with this crisis will depend on how we respond to local - not only global - realities, and how well we recover from the crisis will depend on how willing we are to reorganise our priorities when we rebuild.

In the face of a highly contagious virus, the need to act is acute. Yet in a country like India, where the urban poor live on the streets, in slums, or cheek by jowl in one and two room housing; where their limited supply of water must be fetched from communal water taps; and where hundreds use the few neighborhood toilets, it is nearly impossible to implement what is paradoxically called social distancing, vigorous hand washing, and vigilant decontamination.

Similarly, for millions of daily wage earners, migrant workers, and self-employed workers, staying home is just not an option. A day without work is a day without food. Daily wage earners have negligible savings to fall back on, so they must borrow to survive. Extended periods of borrowing reduces the likelihood of recovery, almost exponentially. How is a large, vulnerable population, caught in a spiral of debt, to build a healthy economy? They are victims of two pandemics, one medical, the other economic.

Have we not known that our working poor have hardly any effective and adequate safety net? As a nation, we have yet to achieve large-scale results and put in concerted efforts to build systems and structures to support them. As a result, pre-existing poverty has exacerbated the impact of the pandemic, and compounded the problems we are left to deal with.

So what can we do differently and more to go forward? How do we build a better society that is not as susceptible to debt, disease, and devastation after the pandemic?

We begin by investing in the three basic needs of people-- food, water, and shelter; and provide three primary basic services--healthcare, education, and banking that people and societies need for their wellbeing. By focusing on these six needs and services, we can make sure that our post pandemic society is both sustainable and equitable.

Any doctor will tell you that the key to good health is nutritious food, clean water, fresh air, and physical and mental exercise. In short, after the pandemic, we need to invest heavily in preventive measures that care for and nurture the not-sick.

Let us build local food networks that make fresh, local grain, milk, and vegetables affordable and available to every last citizen. Because food is a healthcare issue.

Let us provide clean water to urban and rural communities by building tanks, harvesting rain water, digging ponds, and cleaning our existing water bodies. Because water is a healthcare issue.

Let us take this opportunity to clean our environment by building toilets, by recycling our industrial waste, composting our organic waste, planting trillion trees, and by using solar and other renewable energies to meet our fuel needs. Because fresh air is a healthcare issue.

And let us make all work decent work, that provides good income, life insurance, disability assistance that can sustain the worker - especially the migrant worker - her family, and her community. Because work is a healthcare issue.

Let us facilitate the young and vulnerable self employed in their entrepreneurship by providing access to local markets, capabilities and training, sustained capital, and nimble credit so they do not sink into debt and despair. Therefore banking too is a healthcare issue.

Let us nurture education inside and outside the walls of a schoolroom, promoting literacy, and hands-on learning, and skill development that enriches the minds and hearts and promotes wellbeing. In this way, education is also a healthcare issue.

Lastly, let us remind ourselves of the lessons the pandemic is teaching us. When one member of the family falls sick, the entire family is affected, and soon the community is affected, the nation is affected, and then other communities in other nations. The wellbeing of one individual has an impact on people on the other side of the globe. This is true of every action of ours. What we eat, what we buy, what we think, and what we do has reverberations and repercussions on all life on earth. It is this anubandh, this interconnectedness, that sustains all life on earth. We are all in this together, whether we choose to see it or not.

- Ela R. Bhatt

Chancellor of the Gujarat Vidyapith, Ahmedabad

महात्मा गाँधी तथा खान अब्दुल गफार खान, प्रार्थना सभा के दौरान, मसुरी, मई १९४६।

कोरोना से पायी सीख

डॉ. उल्हास जाजू, वर्धा स्थित महात्मा गाँधी इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज (MGIMS) में मेडिसिन विभाग में निदेशक प्रोफेसर है। पेशे से चिकित्सक डॉ. जाजू अपने छात्रों को सामाजिक समझ के आधार पर समुदाय के लिए डॉक्टर होने की सही अवधारणा सिखाते हैं। वह समुदाय के लिए कार्य करने के जुनून को भी प्रज्वलित करते हैं और समता आधारित समाज को साकार करने में विश्वास रखते हैं। गाँवों के स्वास्थ्य और उत्थान में गाँधी विचार आधारित मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सेवाग्राम के आसपास स्थित गाँवों में सफल क्रियान्वयन से स्पष्ट होती हैं। कोरोना महामारी के दौर से सारा विश्व गुजर रहा है तब कोरोना हमारे लिए क्या सीख देता है, इस विषय पर डॉ. जाजू ने विस्तृत रूप से लेख लिखा है। यह लेख आज के दौर में हमें बहुआयामी दृष्टिकोण से समझने लायक बन रहा है। 'खोज गाँधीजी की' के अगले कुछ अंकों में हम इसे श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

यक्ष प्रश्न : कोरोना जैसे नए जीवाणु (स्वाइन फ्लू, इबोला, एच १ एन १) कहर ढाते नजर आते हैं। इनकी उत्पत्ति के पीछे क्या कारण है?

निसर्ग की रचना में परस्पर पूरकता, परस्पर नियंत्रण भी है। बुद्धि प्रामाण्यवादी मानव ने निसर्ग के कुछ नियमों को जाना जिसे हम विज्ञान कहते हैं। विज्ञान प्राप्ति का अहंकार मनुष्य को इस हद तक ले गया कि वैज्ञानिकता की कसौटी पर जो खरा नहीं उतरता वह सत्य ही नहीं है, विज्ञान युग की यह मनोधारणा बनी। बुद्धि संगत खोज से परे निसर्ग का बहुत बड़ा क्षेत्र है जो बुद्धि के आकलन से बाहर है यह मनुष्य भूल गया।

परिणामत: निसर्ग के ब्रह्मांड (कॉसमॉस) को न समझते हुए, बुद्धि से निसर्ग पर विजय प्राप्त करने के अहंकार ने, निसर्ग की परस्पर पूरकता और नियंत्रण को क्षति पहुंचाई। पर्यावरणीय निसर्ग के नियमों की अवहेलना से जो संकट खड़े हुए हैं, वे कुछ हमने समझे हैं, परंतु निसर्ग की परस्पर पूरकता और परस्पर नियंत्रण के आयाम अछूते ही हैं। यह संकट व्यक्तिगत पराक्रमों से हल नहीं होना, सामूहिक शक्ति लगानी जरूरी है। परस्पर पूरकता इस हद तक नष्ट हो रही है कि आज मनुष्य ही मनुष्य के विरोध में खड़ा हो गया है।

मच्छर अनियंत्रित होने से उनके माध्यम से आए रोग जैसे जापनीज एन्सेफेलाइटिस, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया हमने अनुभव किए ही हैं। अब नए नए वायरस जन्म ले रहे हैं, जिन पर हमारे पास आज कोई भी हल नहीं। शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्ति कमजोर पड़ने पर शरीर लड़ नहीं सकता। विज्ञान को वैक्सीन ढूंढने के लिए वर्ष दो वर्ष लग जाते हैं। तब तक ये यमदूत तबाही मचा चुके होते हैं। मानव समाज आज हतबलता महसूस कर रहा है।

जवाब कहां है?

निसर्ग नियमों के अनुकूल जीनेवाली जीवन पद्धति विकसित करके शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाना। पर्यावरणीय संकट का हल हमारे परिसर में क्या है उसकी पुनर्स्थापना क्या हो सकेगी इसको सामूहिकता से जूझना।

हमारी गलती कहां हुई?

१. शरीर साधन है, वह स्वस्थ रहना चाहिए। शरीर धर्म निभाने का साधन शरीर श्रम है और शुद्ध पोषण है। निसर्ग की मांग है कि करीब चार घंटे का शरीर श्रम रोजाना का शरीर धर्म निभाने के लिए आवश्यक है। हम बुद्धिजीवी और श्रमजीवी दो वर्गों में बट गए हैं। बुद्धिजीवी वर्ग 'बिन श्रम खावे चोर कहावे' की श्रेणी में आता है। बुद्धिजीवी समाज में

तेजबहादूर सप्रु के साथ महात्मा गाँधी, १९४६।

सत्ता (शासन सत्ता, अर्थ सत्ता, व्यावसायिक सत्ता, धर्म सत्ता, लिंग सत्ता) हथियाता है। सत्ता के संरक्षण के लिए समाज में हिंसा आधारित रचना भी (कानून, पुलिस, सेना) उभरती है। सत्ता शोषण की (हिंसा की) वाहक है, असमानता की जननी है। निसर्ग के 'प्रेम के नियम' को त्याग कर 'शक्ति के नियम' से समाज संचालित किया जाता है। समाज विघटन का यह आरंभ है।

हमें श्रम आधारित और श्रम प्रतिष्ठित जीवन की ओर समूह रूपेण मुड़ना होगा। श्रम किए बगैर कोई समाज में रह ही न सके (अपंग, बीमार, वृद्ध व्यक्ति छोड़कर) ऐसी समाज व्यवस्था बैठानी होगी। संक्षिप्त में कृषि आधारित श्रम प्रतिष्ठित जीवन की राह चलनी होगी। गाँधी ने रस्किन की किताब– अन टू दिस लास्ट (सर्वोदय) – से पाया तीसरा बोध किसान का जीवन सबसे मंगलमय जीवन है उपरोक्त साक्ष्य देता है।

२. नैसर्गिक संसाधनों के (जल जंगल जमीन जानवर) सहारे परिश्रम करके मनुष्य जीने के लिए आवश्यक उपभोग कि व्यवस्था – अनाज सब्जी फल जैसे खाद्य पदार्थ (लक्ष्मी) पाता है।

उसे धरती माता ने श्रम के बदले दिया प्रसाद मानकर अपना पोषण करता है । अलग अर्थ से कहें तो श्रम ही लक्ष्मी है। प्रसाद लक्ष्मी का सगुण रूप है। लक्ष्मी संग्रह नही की जा सकती (परिग्रह नहीं करने देती) कारण अनाज नष्ट होने वाली (पेरिशेबल) वस्तु है। लक्ष्मी बांटी जा सकती है। लक्ष्मी समतामूलक समाज की देवता है। लक्ष्मी का वास श्रमजीवी समाज में है।

बुद्धिजीवी सत्ताधारियों ने बाजार की रचना गढ़ी, जहां वस्तु स्वरूप लेन देन (बार्टर सिस्टम) की जगह विनिमय के साधन के रूप मे नष्ट न होनेवाले (नॉन्पेरिशेबल) रुपए को लाया। रुपया संग्रहित किया जा सकता है अतः बुद्धिजीवियों के हाथ शोषण का आसुरी साधन (लफंगा रुपया) बनता है। बिना शरीर श्रम किए बुद्धिजीवी रुपया संग्रह कर सकता है, क्योंकि शरीरश्रम और बुद्धिश्रम की रुपए के बाजार में आंकी जानेवाली कीमत में कानूनन महद अंतर है। गाँधी ने रस्किन की किताब– अन टू दिस लास्ट (सर्वोदय) से पाया दूसरा बोध नाई की और वकील की मजदूरी समान होनी चाहिए की हमने धज्जियां उड़ाई। निसर्ग का संकेत लेबर करंसी (बुद्धिश्रम और शरीरश्रम की कीमत समान) को हमने अपनी काक बुद्धि से ताक पर रख दिया है।

निसर्ग संकेतों के अनुसार श्रमजीवी और बुद्धिजीवी वर्ग का मुआवजा रोकड़ या वस्तु स्वरूप में समान ही होना चाहिए। बुद्धिजीवी की काबिलियत का मुआवजा, इज्जत (प्रेस्टीज) के रूप में समाज से मिलना चाहिए। यह लेबर करंसी व्यवहार में नहीं उतरती तब तक समतामूलक अर्थ रचना (इकोनामी ऑफ परमानंस) दूभर है।

इसका अर्थ यह है कि दैनंदिन जीवन में रुपए का जितना महत्त्व कम हो (आदर्श तो कंचन मुक्ति है) यानी बाजार मुक्ति का हो, उतना हम लफंगे रुपए के निर्धारित शोषण से मुक्त होंगे। जितनी हम लक्ष्मी की उपासना करेंगे उतना ही अहिंसक समाज की राह पर आगे बढ़ेंगे। बाजार मुक्ति के साथ–साथ अस्तेय और असंग्रह, स्वदेशी, सादगी और शरीर श्रम व्रत जुड़े होंगे। शरीर श्रम व्रती समाज भूषण होगा।

३. अर्थव्यवस्था की नींव पर सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन की इमारत खड़ी है। डॉ. जे. सी. कुमारप्पा के 'चिरंजीवी अर्थशास्त्र' पुस्तक में कुदरत में मौजूद व्यवस्थाओं को यूँ समझाते हैं।

अ) परोपजीवी अर्थव्यवस्था (पैरासाइटिक इकोनामी) इसकी आदमखोर सूरत है। यह फायदे का स्थान नष्ट करने वाली व्यवस्था है। इसमे कुछ देने की कल्पना ही नहीं होती। जैसे – चीता।

आ) आक्रमक अर्थव्यवस्था (प्रीडीटरी इकोनामी) याने लूटा लूट सूरत है। इसमें कुछ दिए बिना फायदा लेने की प्रवृत्ति होती है. जैसे – जेबकतरा।

इ) पुरुषार्थ युक्त अर्थव्यवस्था (इकोनॉमी ऑफ एंटरप्राइज) याने कारोबारी सूरत। इसमें मेहनत और फायदे का उचित समन्वय होता है। इसमें प्रथम देकर बाद में लेना होता है। इसमें हक और फ़र्ज़ का समतोल होता है। जैसे – चिड़िया।

ई) समूह प्रधान अर्थव्यवस्था (करोगेशन इकोनामी) याने गिरोह बंदी सूरत। इसमें व्यक्ति के हित से समूह हित को प्रधानता होती है। इसमें हक से फर्ज का जज्बा ज्यादा तगड़ा होता है। अपने हिस्से से अधिक देना इसकी विशेषता है, जैसे – मधुमक्खी।

उ) सेवा प्रधान अर्थव्यवस्था (इकोनामी आफ सर्विस) याने किसी मुआवजे की परवाह न करते हुए दूसरों का भला करना होता है। इसमें निस्वार्थ भाव से देना होता है।जैसे – माँ ये पांचों व्यवस्थाएं उत्तरोत्तर शुद्ध प्रकार, अधिकाधिक स्थायित्व और अहिंसा के क्रम में दर्शाई गयी हैं।

सारे अन्य प्राणी मुस्तैदी से कुदरत के नियमों का पालन करते हैं। उन्हें अपनी 'इच्छा' कार्यान्वयन करने की कोई गुंजाइश नहीं। वे अपने जन्मजात स्वभाव के अनुसार काम करते हैं, जो कुदरत के अनुकूल होते हैं।

–डॉ. उल्हास जाजू,
निदेशक प्रोफेसर, महात्मा गाँधी इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, वर्धा

क्रमशः

फाउण्डेशन की गतिविधियां

प्राथमिक जरूरत की सामग्री, आरोग्य पुस्तिका तथा एक दूजे के विश्वास का आदान-प्रदान

कोरोना के प्रति जन जागृति अभियान

वर्तमान समय में विश्व गंभीर महामारी का सामना कर रहा है, भारत भी इस स्थिति का शिकार बना हुआ है। हम लोग अकसर यह सुनते हैं कि किसी भी स्थिति के प्रति उनकी वास्तविक समझ उस स्थिति से होनेवाले नुकसान को कम करती है। हमारे देश के कई भागों में इस कोविड-१९ के प्रति काफी भ्रम फैला हुआ है, अगर लोगों तक वास्तविक जानकारी पहुँचाई जाए तो कई तरह की भ्रांतियों को और लोगों के डर को भी दूर किया जा सकता है।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा जलगाँव जिला के २२ गाँवों के करीब सात हजार पाँच सौ से भी अधिक परिवार तक कोविड-१९ की वास्तविक जानकारी पुस्तिका के माध्यम से पहुँचाई गई। इस संदर्भ में निम्न गतिविधियों को अंजाम दिया गया।

कोविड-१९ पर जैन इरिगेशन सिस्टम्स द्वारा मराठी भाषा में प्रकाशित पुस्तिका का वितरण किया गया। कोविड-१९ की स्थिति में हमें व्यक्तिगत क्या सावधानी बरतनी चाहिए, इस स्थिति का प्रत्यक्षीकरण कर लोगों को सरलता से समझाया गया। लॉकडाउन की स्थिति में अपने घरों में स्थिति लोगों के लिए खुराक का प्रश्न विकट हो गया है। ऐसी स्थिति में जलगाँव शहर तथा आसपास के गाँव में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया।

इस स्थिति में बीमार लोग तथा गर्भवती महिलाओं की विशेष संभाल रखते हुए चिकित्सक सुविधा तथा ऍम्बुलन्स की सुविधा मुहैया कराई जा रही है। व्यक्तिगत सावधानी बरतने के लिए कपड़े से बनाए गए मास्क न्यूनतम मूल्य में वितरण किए जा रहे हैं। प्रशासन की ओर से मिलने वाली सामग्री की वितरण व्यवस्था को अधिक सुदृढ़ बनाकर लोगों तक पहुँचाने में सहायता प्रदान की जा रही है।

उपरोक्त कार्य में फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं ने अपना योगदान प्रदान किया।

लॉकडाउन की स्थिति में खाद्य सामग्री का वितरण

कोरोना महामारी से दुनियाँ की आर्थिक स्थिति अस्तव्यस्त हो चुकी है। भारत में आर्थिक रूप से कई परिवार तबाह हो गए हैं। खास तौर पर ऐसे परिवार जिनके लिए हररोज की व्यवस्था हररोज काम करने से ही होती है। ग्रामीण भाग में कई मजदूरी से जुड़े परिवारों के लिए खुराक का प्रश्न विकट बन गया है। जलगाँव शहर तथा आसपास के कई गाँवों में न जाने कितने परिवार हैं जिनको पर्याप्त भोजन प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। इस महामारी की स्थिति उनके लिए संकट जनक बन गई है। ऐसे कई परिवारों को फाउण्डेशन द्वारा खाद्य सामग्री मुहैया कराई जा रही है। इस सामग्री में दाल, मसाला, चीनी, चाय, खाद्य तेल, नमक आदि का समावेश किया गया है। जलगाँव के चोपड़ा तहसील के कई आदिवासी गाँवों में गंभीर स्थिति है, उन गाँवों में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता द्वारा इस सामग्री की किट पहुँचाई जा रही है तथा कोरोना की स्थिति का सामना कर सावधानी बरतने के उपायों के बारे में भी बताया जा रहा है। गोर्‍यापाडा गाँव के सभी लोगों ने फाउण्डेशन के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ता हमेशा कठिन परिस्थिति में हमारे साथ खड़े रहे हैं। उनके प्रयास से हमारे जीवन को नई रोशनी मिल रही है।

सहयोग भावना से हो जाते है हम सब एकाकार... - इस महामारी के दौर में फाउण्डेशन द्वारा कई परिवारों तक पहुँचा सहयोग भाव

जरूरतमंद लोगों के लिए राजाभोज में भोजन बनाते सहकारी वृंद, जैन हिल्स स्थित राजाभोज का दृष्य

खाद्य सामग्री का वितरण

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा जैन इरिगेशन के संयुक्त सहयोग से जरूरतमंद लोगों तक आवश्यक भोजन तथा सामग्री पहुँचाई गई। कृतज्ञता भाव के साथ फाउण्डेशन तथा जैन इरिगेशन के ४० कार्यकर्ता द्वारा सुबह ४ बजे से रसोई कार्य का आरंभ किया जाता है। जैन हिल्स स्थित राजाभोज भोजनालय में आरोग्यप्रद एवं स्वादिष्ट भोजन तैयार कर शहर तथा आसपास के गाँवों में पहुँचाया जा रहा है। भोजन के इस पैकेट में सुबह चार रोटी, सब्जी, चटणी तथा संध्या समय पर ४०० ग्राम खिचड़ी दी जा रही हैं। इस कार्य में हर रोज करीब ६०० किलो धान्य तैयार किया जाता है। सामाजिक कृतज्ञता के साथ अपनी सभी गतिविधियों को आकार देकर समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व अदा करने का यह समय है।

कोरोना महामारी की स्थिति में हर सुबह ६ हजार से अधिक और संध्या समय पर ४ हजार से अधिक जरूरतमंद लोगों को भोजन पहुँचाया जा रहा है। २ अप्रैल से अब तक सुबह और शाम मिलाकर करीब ५ लाख ७९ हजार लोगों को भोजन के पैकेट वितरित किए गए। बीच में आमरस तथा मिठाई भी लोगों तक पहुँचाई गई।

सभी तरह की सावधानी के साथ आरोग्यप्रद भोजन के पैकेट तैयार करने में व्यस्त सहयोगी गण

लॉकडाउन की स्थिति में कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए कार्यरत डॉक्टर्स, नर्सेस, चिकित्सा कर्मचारी, पुलिस तथा होमगार्ड, प्रसार माध्यम के कर्मचारी, सफाई कर्मचारी तथा कोरोना योद्धाओं को ३ अप्रैल से करीब १३ हजार से अधिक मँगो ज्यूस के पैकेट वितरित किए गए।

भोजन बनने के बाद इसे तुरंत लोगों तक पहुँचाया जाता है।

भोजन वितरण काउन्टर

Google meet on
Conflict Transformation
संघर्ष परिवर्तन

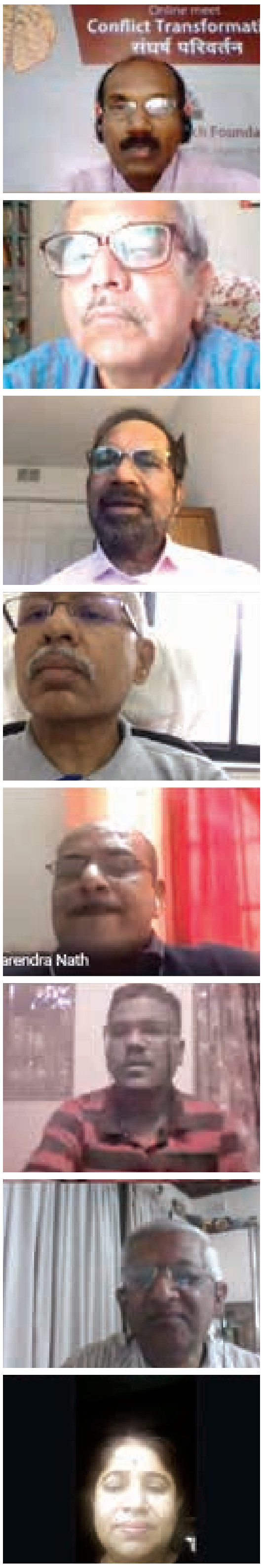

संघर्ष परिवर्तन पर ऑन–लाइन कार्यशाला

कोरोना की इस महामारी की स्थिति में सब लोग अपने घरों में ऐसी स्थिति में हमें हमारी समझ को अधिक गहराई से विकसित करनी चाहिए। वर्तमान में सभी तरह के संघर्ष से हम जूझ रहे हैं। ऐसे दौर में फाउण्डेशन द्वारा 'संघर्ष परिवर्तन' (Conflict Transformation) पर ऑन–लाइन कार्यक्रम का आरंभ किया गया है। एक सप्ताह तक हर रोज डेढ़ घंटा के दौरान संघर्ष परिवर्तन पर वेबिनार के जरिए प्रस्तुति की जाती हैं। हिंदी और अंग्रेजी में आयोजित इस ऑन–लाइन कार्यशाला में देश एवं विदेश के शिक्षक, उद्योजक, व्यवसाय कर्ता तथा संस्थाओं के प्रतिनिधि मिलाकर कुल ३६ सहभागियों ने हिस्सा लिया था। इस कार्यशाला में जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोण को कैसे सकारात्मक रखा जा सकता है, इस पर विशेष जोर दिया गया।

इस कार्यशाला में संघर्ष क्या है? संघर्ष के नाम, संकल्पना, संघर्ष के विविध पहलू, संघर्ष निर्माण होने की वजह, कौन सी परिस्थिति में संघर्ष सकारात्मक और नकारात्मक होता है, ऐसे विभिन्न जानकारी को रोचक प्रस्तुति के माध्यम से डॉ. जॉन चेल्लदुरै तथा अश्विन झाला ने प्रस्तुत किया। डॉ. जॉन ने कहा कि अपने जीवन में संघर्ष के अलावा कोई भी कार्य नहीं हो सकता है। संघर्ष करते समय समझदारी दिखाई जाए तो उस परिस्थिति में से मार्ग निकाला जा सकता है। परिस्थिति और मन स्थिति पर संघर्ष का स्तर निर्भर रहता हैं। संघर्ष करते समय उसका उद्देश्य क्या है, इसको भी समझना महत्त्वपूर्ण होता है।

फाउण्डेशन के अश्विन झाला ने कार्यशाला में विभिन्न संकल्पना तथा खेलों के माध्यम से मानवी संबंधों के बारे में विश्लेषण कर समझाया। एक–दूसरे से प्रेम और सुदृढ़ संबंध कैसे निर्माण करें इसके बारे में अनेक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया।

इस कार्यशाला में सहभागी हुए सहयोगियों ने विविध खेलों में उत्साह के साथ सहभाग लिया तथा विविध अनुभवों का प्रस्तुतिकरण भी किया।

इस कार्यशाला के दौरान विशेष रूप से फाउण्डेशन के संचालक डॉ. सुदर्शन आयंगार की उपस्थिति प्रेरणात्मक बनी रही। डॉ. आयंगार ने संघर्ष की स्थिति और सत्याग्रह पर प्रकाश डालते हुए गाँधीजी की अहिंसक जीवनशैली को समझाने का प्रयास किया।

फाउण्डेशन की ओर से सौ. अंबिका जैन, उदय महाजन, भूषण मोहरीर तथा योगेश संधानशिवे की भूमिका सराहनीय रही।

इस कार्यशाला की अगली श्रृंखला जल्द ही प्रस्तुत की जाएगी। इसमें सहभागी हेतु गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन कार्यालय अथवा संपादक महोदय का संपर्क करें।

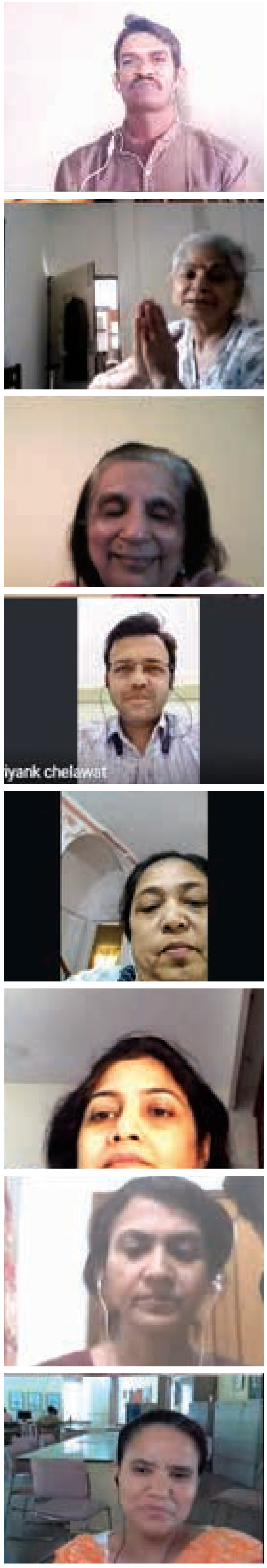

संघर्ष परिवर्तन कार्यशाला में सहभागी बने कई विद्वत् जन

इस कार्यशाला में जुड़े लोगों में से कुछ सहभागियों के अभिमत

Very well designed and conducted course.

Ms. Shivani Bohra
Jaipur

....

Great learning on life Style.

Dr. Shaffali Jain
Lecturer, Jaipur

....

This training must be given also to the Police officers, Women cell functionaries, teachers...

Prof. Tulsi Patel
Sociologist, New Delhi

....

An eye opener, unique introduction to life and its relationship . This training must be given to teenagers.

Anuja Kshirsagar

....

Thank you very much!! Very clear and inspirational as well.

Dr. George Palamattam
Social Worker, Chicago, US

....

This work shop was very informative. I have learned some things at personal level. To handle the conflict situation, I should know myself first. If I know my limitations, try to understand other person and his situation, then maybe I can handle it in Nonviolent way.

Dr. Rashmi Borikar
Gynaecologist, Aurangabad

....

The Enlightening sessions helped me to introspect deeply into my manner in dealing with persons and situation I face in day to day life. The workshop has given me tools to handle my conflicts.

Rohit Pandya
Research Scholar, New Delhi

....

In depth understanding of managing conflict; looking at conflict from different perspectives. The tools given to us are immeasurable.

Geeta Bali Narsee
Professional, Natal South Africa

◆◆◆

पाठकों के अभिमत

*‘**खोज गाँधीजी की**’ पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत।*

– संपादक

I am deeply obliged for the April 2020 issue of 'Khoj Gandhiji Ki'. As in earlier issues, this one too contains inspiring and informative write-ups and other contents. 90th anniversary of Gandhiji's Salt March, covered in this issue, is an historic occasion, which has many lessons for today also. However, due to the national 'lockdown' for controlling the damage due to CORONA-19, Gandhian institutions have not been able to suitably observe it. Let us hope and pray that our India comes out of this phase with minimum damage and soon.

I am again grateful to the GRF for the issue.

Y. P. Anand
New Delhi

....

‘खोज गाँधीजी की’ पत्रिका का अप्रैल अंक सदैव की तरह सत्य व अहिंसापरक सोच एवं सूचना के संतुलन को लेकर आया.

संपादक श्री अश्विन झाला ने अपनी संपादकीय में कोरोनाकाल में गाँधीजी के विचारों पर आधारित सादगी भरे जीवन की सार्थकता बताते हुए पर्यावरणीय चेतना को जगाया और अपने ‘नमक सत्याग्रह’ के लेख में दांडी यात्रा की सैद्धांतिक गहराई का भान कराया.

महामारी के दौर में प्रो. गीता धरमपाल जी का मानवता खोजता हुआ सूक्ष्म विश्लेषण अति आधुनिकता पर गाँधीवादी लगाम लगाए जाने की मूक–माँग करता दिखा.

श्री अशोक जैन जी ने अपने आलेख में जिस प्रकार ‘गाँधी विचार तीर्थ’ के निर्माण की नींव में भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह के जीवनदायी सिद्धांतों की परम्परा का सूक्ष्म सिंचन किया और पारिवारिक परम्परा का निर्वहन करते हुए उसे गाँधी जी के विचारों के संरक्षण का सार्थक केंद्र बनाने में पीढ़ी–दर–पीढ़ी किए गये प्रयासों का जो उल्लेख किया है, वो अनुकरणीय है.

आशा है मानवता, सौहार्द एवं शांति को लक्षित करती, इस पत्रिका की यह ‘खोज’ निरंतर रहेगी... अनवरत रहेगी...।

नीलेश जैन,
रचनात्मक निर्देशक, ओगिल्वी माथेर, मुंबई

◆◆◆

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

चित्र श्रृंखला - ०४

महात्मा को नमन

महात्मा गाँधी के अंतिम समय की रोचक जानकारी को प्रस्तुत करती 'महात्मा को नमन' चित्र श्रृंखला

महात्मा गाँधी के पार्थिव शरीर को राज घाट ले जाने से पहले का दृश्य, बिड़ला हाऊस, दिल्ली, जनवरी ३१, १९४८

''वे सही थे, उन्हें पता था कि वे सही हैं, हम सभी को पता है कि वे सही थे। एक ऐसा मनुष्य जिसने उन्हें मार डाला, उसे भी पता था कि वे सही है। हिंसा की विचारधारा कितनी भी लंबी चले, परंतु उन्होंने सिद्ध किया है कि गाँधीजी सही थे।''

- पर्ल एस. बुक

(एक अमेरिकी महिला साहित्यकार। उनको १९३८ को नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।)

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:
Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)

प्रकाशन: २ मई, २०२०